ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 13 जुलाई 2025

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 13 जुलाई 2025 से 19 जुलाई 2025

श्रावण कृ. 03 ● वि० सं०-2081 ● वर्ष 66, अंक 28, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,97,29,49,125 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

डी.ए.वी. वेलचेरी, चेन्नई में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल वेलचेरी, चेन्नई के प्रांगण में 11वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विभिन्न गतिविधियों के द्वारा चार दिनों तक मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय अनुभवात्मक प्रशिक्षक और योग प्रशिक्षक योगशिरोमणि श्री विनोद कुमार ने उपस्थिति दी। अपने संबोधन में उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया और उन्हें 'प्यार और हॅसी' थेरेपी सिखाई। उनके साथ उनकी माँ श्रीमती शारदा नायर भी थीं, जो एक योगा प्रैक्टिशनर हैं।

38 विद्यार्थियों ने योगासन किए और तमिल साहित्य पुरनानूरु के अनुसार पाँच भू–आकृतियों – 'कुरिंजी, मुल्लई, मरुदम, नेयदल और पालै' को विभिन्न आसनों के माध्यम से प्रदर्शित किया और 'एक पृथ्वी' की अवधारणा के महत्त्व को दर्शाया। सूर्य नमस्कार और चंद्र नमस्कार के बाद 'मास योग प्रोटोकॉल' हुआ। योग के आह्वान और मधुर संगीत ने सभी 'योगियों' को एकजुट किया। प्रधानाचार्या श्रीमती सुजाता एम. ने कहा कि योग अस्त. व्यस्त जीवन से मुक्ति दिलाता है और हर व्यक्ति को अपने शरीर और मन को मज़बूत बनाने में मदद करता है। उन्होंने 'पुष्टि' पर ज़ोर दिया जो साँस की शक्ति का दोहन करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के लिए योग का अभ्यास दैनिक दिनचर्या के रूप में किया जाना चाहिए।

प्राणायाम कार्यशाला आयोजित की गई। विद्यार्थीवृंद तथा शिक्षकगण वेलचेरी के तरमणि में स्थित वृद्धाश्रम गए और क्लैप थेरेपी सिखाई गई। शारदा शक्ति पीठम, अनाथाश्रम जाकर 150 बच्चों को प्रशिक्षित किया। योग कार्यशाला का आयोजन किया गया।

डी.ए.वी. बनखंडी (हि.प्र.) में हुईं आर्यसमाज की गतिविधियाँ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बनखण्डी (जिला कांगड़ा) के प्राचार्य श्री सुभाष शर्मा ने एक विशेष भेंट वार्ता में सत्र 2025–26 की प्रस्तावित गतिविधियों का खुलासा करते हुए कहा कि विद्यालय में शिक्षा तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ छात्रों में नैतिकता के मूल्य भरने हेतु वैदिक गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया जाता है।

प्राचार्य महोदय ने बताया कि सत्र का आरम्भ वैदिक हवन से हुआ। महात्मा हंसराज के जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

हाल ही में डी.ए.वी. का स्थापना दिवस अत्यन्त श्रद्धा और उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ सम्पन्न किया गया। छात्रों द्वारा बनखण्डी बाज़ार में एक रैली निकली जिसमें डी.ए.वी. के सरोकारों से संबन्धित नारों से बाज़ार गूंज उठा। जयघोष तथा मधुर भजनों ने लोगों को घरों से बाहर निकलने पर मज़बूर कर दिया।

प्राचार्य ने सहयोग के लिए सभी का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. मनेई (कांगड़ा) ने मनाया स्थापना दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मनेई (हिमाचल प्रदेश) ने स्कूल परिसर में डी.ए.वी. स्थापना दिवस मनाया। इस मौके पर स्कूल परिसर में हवन व मनेई बाज़ार तक रैली निकाली गई स्कूल के प्रधानाचार्य दिनेश कौशल के नेतृत्व में बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ किया गया। विद्यालय के शिक्षकों द्वारा स्वामी दयानंद सरस्वती की स्मृति में भजन प्रस्तुत किया गया। छात्रों ने भी इस दिन को मनाने के लिए पूरे मन से भाग लिया और भाषण दिए, रैली में भाग लिया और इस अवसर पर उत्साह के साथ नारे लगाए।

प्राचार्य ने बताया कि डी.ए.वी. देश की सबसे बड़ी गैर सरकारी संस्था है, जो पूरे देश में शिक्षा की ज्योति जगाकर देश को सच्चे देशभक्त प्रदान करने में दिन–रात लगी हुई है। उन्होंने छात्रों को प्रोत्साहित किया कि वे जहां भी जाएं, कड़ी मेहनत के बल पर अपना वर्चस्व स्थापित करें। इस उपलक्ष्य पर प्रधानाचार्य ने उपस्थित शिक्षकों एवं बच्चों को डी.ए.वी. शैक्षणिक संस्था के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं।

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 13 जुलाई 2025 से 19 जुलाई 2025

दोनों हाथों से भर-भरकर दें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

दिवो विष्ण उत वा पृथ्व्याः, महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः, आप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्।।

अथर्व 7.26.8

ऋषिः **मेधातिथिः**। देवता **विष्णुः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**विष्णो**) हे सव्रव्यापक परमात्मन्! (**दिव**) द्युलोक से (**उत वा**) और (**पृथिव्याः**) पृथिवी–लोक से [तथा] (**विष्णो**) हे विश्वान्तर्यामिन्! यज्ञ के देव! (**महः**) महनीय (**उरोः**) विस्तीर्ण (**अन्तरिक्षात्**) अन्तरिक्ष–लोक से (**बहुभिः**)वहुत– से (**वसव्यैः**) ऐश्वर्य–समूहों से (**हस्तौ**) दोनों को (**पृणस्व**) भर ले। (**दक्षिणात्**) दाहिने हाथ से (**आ प्रयच्छ**) दान दे (**उत**) और (**सव्यात्**) बाएँ से [भी] (आ [प्रयच्छ]) दान दे।

● हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्तर्यामिन्! हे विश्व–ब्रह्माण्ड के स्वामिन! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अतः तुम धन–कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो ओर हम अकिंचन हैं। अतः हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने–बाएँ दोनों हाथों से भर–भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे द्यु–लोक में प्रकाश का अनुपम पारावार भरा पड़ा है। वह प्रकाश तुम हमें भी प्रदान करो। तुम्हारे रचे विशाल अन्तरिक्ष–लोक में वायु और पर्जन्य का सागर उमड़ रहा है। उसमें से हमें भी प्राण–वायु और अमृतमय वृष्टि–जल प्रदान करो। तुम्हारे रचे पृथ्वी–लोक से सुवण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यों का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु–लोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक के ऐश्वर्यों को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी–लोक है, जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि–पर्यन्त सब ढ़ांचा आ जाती है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन–यापन,व्यान,उदान, समा, इन पांचों से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्रागण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त–पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य–क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान–प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों–सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु–लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यों से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो।

हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्वज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

'तत्त्वज्ञान' पुस्तक के सात अध्याय समाप्त हुए। वासनाक्षय, शरीर को स्वस्थ रखना, प्राणायाम, ध्यान, श्रेय तथा प्रेयमार्ग, शरीर और लोक के तत्त्वों की समानता, सृष्टि तत्त्व और सृष्टि विज्ञान तथा भगवान् राम की व्यथाकथा, इन सब विषयों पर चर्चा इसलिए की गई कि मनुष्य ज्ञान, अभ्यास के बल पर तत्त्वज्ञान को प्राप्त करने का अधिकारी बने। पूर्ण रूप से अधिकारी बनने के लिए कुछ अन्य मर्म की बातों का वर्णन करना शुरू किया गया।

विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति और मुमुक्षत्व, तत्त्वज्ञान के इन चार साधनों पर विशद चर्चा हो चुकी। इस सारी चर्चा के बाद साक्षात्कार तक पहुँचने के लिए साधक की तैयारी कैसी हो, इस पर चर्चा आरंभ की। **'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'** के उपासना–विषय, ऋषि दयानन्द के अनुभवों और उनके द्वारा दिए आदेशों की चर्चा की। स्वामी जी ने कहा इनका पालन करते हुए अधिकारी के हृदय में बृहज्ज्योति प्रकट हो जाती है। लेकिन होती तभी है जब परमात्मा स्वयं कृपा करें। इसमें कोई शंका नहीं। परमात्मा साधक को उपासना–योग से युक्त करते है।

बाल्यकाल की कथा से नौवाँ अध्याय आरम्भ हुआ। बाल्यकाल में (12 वर्ष की आयु में) व्यास पूजा के दिन पुरोहित जी से सुनी भगवान वेद व्यास और श्री नारदमुनि की एक कथा सुनाकर स्वामी जी ने अनन्य भक्ति की आवश्यकता पर बल दिया।

अनन्य–भक्ति, ईश्वर–प्रणिधान, शरणागति का वर्णन किया जिसे ऋषि दयानन्द ने उपासना कहा है। इसका फल है ईश्वर में विशेष भक्ति। उपासना विषय में ही भक्ति करने का ढंग भी बताया गया है।

..... अब आगे

प्रेम–तत्त्व का उदय

भक्त के हृदय में ईर्ष्या, द्वेष और इसी प्रकार के अन्य क्षुद्र भाव रहने नहीं पाते। साधक के हृदय में तब एक ही तत्त्व होता है और उसी का नाम है 'प्रेम'। भक्ति का स्वरूप क्या है ? प्रेम ही तो उसका स्वरूप है :

सा त्वस्मै परमप्रेमरूपा।

नारद, भक्तिसूत्र।।

स्वामी विवेकानन्द जी ने भी यही कहा है कि "भक्त का वैराग्य प्रेम से ही पैदा होता है। भक्त के हृदय में कभी किसी के प्रति क्रोध या घृणा नहीं आती। प्रेम का बल भक्त को परमात्मा की ओर खींचता लिए जाता है। यही महान् आकर्षण भक्त की समस्त आसक्तियों का नाश कर देता है। यही प्रबल अनन्त प्रेम भक्त के हृदय में प्रवेश करके अन्य सभी आसक्तियों को वहाँ से निकाल देता है। भक्त जब स्वयं भगवान् के प्रेम–रूपी समुद्र–जल से अपने हृदय को भरा देखता है, तब दूसरी आसक्तियाँ टिक भी कैसे सकती हैं ? सारांश यह है कि भक्त का वैराग्य अर्थात् भगवान् के सिवा अन्य समस्त विषयों में अनासक्ति भगवान् के प्रति प्रेम से ही उत्पन्न होती है।"

कबीर जी ने इस प्रेम–रूपी भक्ति का कितना सुन्दर वर्णन किया है :

कबिरा काजल–रेखई,
अब तो दई न जाय।
नैनन प्रीतम रमि रहा,
दूजा कहाँ समाय।।

'आँखों में काजल भी अब लगाना कठिन है। क्यों ? वहाँ तो प्यारा प्रीतम रमा हुआ है। अब सुरमे के लिए भी स्थान नहीं रहा।' रहीम ने भी ठीक कहा है :

प्रीतम छवि नैनन बसी,
पर छवि कहाँ समाय।
भरी सराय 'रहीम' लखि,
आप पथिक फिर जाय।।

जब प्रेमी भक्त ने परमात्मा को वर लिया, अपने–आपको उसी प्रियतम के समर्पण कर दिया तो अब प्रभु के अतिरिक्त भक्त के हृदय में किसी का विचार भी नहीं आ सकेगा। स्वप्न में भी अन्य का विचार नहीं घुस सकेगा। इसी का नाम भक्ति है, ईश्वर–प्रणिधान है, उपासना है और शरणागति है।

डी.ए.वी. जयपुर में त्रिदिवसीय 'क्षमता संवर्धन कार्यशाला'

डी.ए.वी. विद्यालयों में शैक्षणिक सत्र 2025–26 के शैक्षणिक गुणवत्ता संवर्धन हेतु डी.ए.वी. 'क्षमता संवर्धन कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारम्भ गायत्री मंत्र के उच्चारण एवं दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया।

कार्यशाला में जोन–A एवं जोन–C के कुल 12 विद्यालयों से 122 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यशाला पूर्णतः ऑफलाइन मोड में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विषयों के अध्यापकों को डीएवी, सी.ए.ई. द्वारा प्रशिक्षित 18 विषय–विशेषज्ञों ने प्रशिक्षण प्रदान किया। इस वर्ष विशेष रूप से आवश्यक नवीनतम तकनीकी

कौशलों का प्रशिक्षण दिया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी प्रयोगों पर प्रकाश डाला गया तथा शिक्षण कौशल, कक्षा–अनुशासन, छात्र–रुचि संवर्धन, प्रश्न–पत्र प्रारूप, प्रश्न–पत्र निर्माण कौशल, अंकपत्रिका निर्माण आदि विषयों पर विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया।

समापन समारोह के अवसर पर जोन ए के क्षेत्रीय निदेशक श्री नवनीत ठाकुर एवं श्री हरबंस ठाकुर ने विभिन्न विषयों के लिए निर्धारित कार्यशाला स्थलों का निरीक्षण किया।

प्रतिदिन सायंकालीन सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। शिक्षाविदों के विचारमन्थन व कलाकारों की प्रस्तुति से हर शाम यह सत्र बहुत ही रोचक रहा।

इस सत्र में शिक्षकों की रचनात्मक प्रतिभाओं की झलक भी देखने को मिली। यह तीन दिवसीय कार्यशाला ज्ञान, अभ्यास और सहभागिता का सफल संगम रही।

हंसराज पब्लिक स्कूल आदर्श संयुक्त राष्ट्र पंचकूला में सोत्साह सम्पन्न

हंसराज पब्लिक स्कूल में आदर्श संयुक्त राष्ट्र (MUN) के 9वें संस्करण का समापन उत्साह और अकादमिक गंभीरता के साथ हुआ। दो दिनों तक चली यह शैक्षिक गतिविधि युवाओं के नेतृत्व, वैश्विक जागरूकता और सहयोगपूर्ण समस्या–समाधान का

उत्सव रही।

आदर्श सुयंक्त राष्ट्र को एक समग्र शिक्षण मंच के रूप में डिजाइन किया गया है, जहाँ विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण वाद–विवाद में भाग लेने, वैश्विक मुद्दों का गहन विश्लेषण करने और अपने दृष्टिकोण से परे सोचने का अवसर दिया गया।

इस वर्ष चंडीगढ़, पंचकूला, मोहाली के प्रतिष्ठित विद्यालयों से 230 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिन्होंने 73 से अधिक देशों और राजनीतिक इकाइयों का प्रतिनिधित्व किया। युवाओं ने शोध–आधारित तर्कों और प्रभावशाली प्रस्तुति के साथ जटिल वैश्विक और राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार किया और असाधारण परिपक्वता का प्रदर्शन किया।

समापन समारोह में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती जया भारद्वाज ने कहा, "'एचपीएसएमयूएन' केवल एक शैक्षणिक आयोजन नहीं, यह एक ऐसा मंच है जो जागरूक, संवेदनशील और जिम्मेदार वैश्विक नागरिकों के निर्माण की दिशा में काम करता है। जब छात्र परमाणु निरस्त्रीकरण, बाल संरक्षण या जातीय संघर्ष जैसे मुद्दों पर विमर्श करते हैं, तो वे संवाद की शक्ति, सूचित कार्रवाई के महत्व और नैतिक नेतृत्व की गंभीरता को समझने लगते हैं। एक जटिल और संघर्षपूर्ण विश्व में, हमारे युवाओं को केवल विचारक और वक्ता नहीं, बल्कि संवेदनशील समाधानकर्ता बनना होगा।"

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

डी.ए.वी. सफिलगुड़ा, हैदराबाद में तीन दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सफिलगुड़ा में तीन दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण तकनीकों, मूल्य आधारित शिक्षा, और प्रभावी कक्षा प्रबंधन की दिशा में प्रशिक्षित करना था।

कार्यशाला की शुरुआत डी.ए.वी. साउथ जोन डी के सहायक क्षेत्रीय निदेशक श्री वी. एन. एन. के. शेषाद्री द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं स्वागत भाषण के साथ हुई। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों द्वारा शिक्षकों को छात्र केन्द्रित शिक्षण, नैतिक शिक्षा, मूल्यांकन के आधुनिक दृष्टिकोण, एवं समावेशी शिक्षा पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

विविध गतिविधियाँ, समूह चर्चा, भूमिका निर्वाह, और केस स्टडी के माध्यम से शिक्षकों की सहभागिता को सक्रिय और रोचक बनाया गया। शिक्षकों ने नई शिक्षण विधियों को आत्मसात करते हुए अपने अनुभव भी साझा किए।

विद्यालय प्रबंधन ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम शिक्षकों को सतत् विकास की दिशा में प्रेरित करते हैं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की नींव को और सुदृढ़ बनाते हैं। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागी शिक्षकों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

डी.ए.वी. गोहजू (धर्मशाला) ने मनाया स्थापना दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, गोहजू का स्थापना दिवस बड़े श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत एक शांतिपूर्ण हवन से हुई, जिसमें शिक्षक, बच्चे और अभिभावक एक साथ एक आध्यात्मिक वातावरण में मंत्रोच्चार करते हुए दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए एकत्रित हुए।

छात्रों ने विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भाग लिया। शिक्षकों ने भी छात्रों के साथ अपने अनुभव और भावनाएं साझा कीं।

प्राचार्य श्री विशाल कटोच ने कहा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गोहजू हर क्षेत्र में दिन प्रतिदिन विकास कर रहा है। यह न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में बल्कि खेल और अन्य गतिविधियों में भी आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने बताया कि डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल की स्थापना 13 जून 1988 को डी.ए.वी. कॉलेज चण्डीगढ़ के सेवानिवृत प्राचार्य श्री त्रिलोकी नाथ जी के द्बारा की गयी। उन्होंने डी.ए.वी. आंदोलन के मूल्यों और दृष्टिकोण से जुड़ाव को मजबूत करने में डी.ए.वी. के महत्व को रेखांकित किया।

प्रधानाचार्य ने समारोह में सहयोग देने वाले सभी प्रतिभागियों का हार्दिक धन्यवाद किया।

आर्य युवा समाज, डी.ए.वी. सोलन ने किया वैदिक कार्यक्रम

आर्य युवा समाज के तत्वावधान में एम.आर.ए. डी.ए.वी. विद्यालय, सोलन में "संस्कार सृजन" थीम के अंतर्गत एक गरिमामय सांस्कृतिक एवं वैदिक कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय सभागार में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक परंपरा के अनुरूप ईश्वरस्तुति, प्रार्थना एवं उपासना मंत्रों पर आधारित एक भावपूर्ण नृत्य प्रस्तुति के साथ हुआ। इसके बाद भजनों की सुंदर प्रस्तुतियाँ दी गईं।

कार्यक्रम में चारों वेदों पर आधारित व्याख्यान छात्रों द्वारा प्रस्तुत किए गए जिन्हें विद्यार्थियों ने सरल, सारगर्भित एवं प्रभावशाली शैली में प्रस्तुत किया। इन व्याख्यानों के माध्यम से श्रोताओं को वेदों की मूल अवधारणाओं, समाज में उनके महत्व एवं समकालीन जीवन में उनकी प्रासंगिकता का ज्ञान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैदिक संस्कृति, नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक चेतना का जागरण करना था, जो पूर्णतः सफल रहा।

प्रधानाचार्या ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना की तथा उन्हें जीवन में सत्संस्कारों को अपनाने का संदेश दिया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**